5. निम्नलिखित गद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 4+4=8

(स) सोचा-यह है हमारे गिरावट की सीमा। आज ऐसा साहित्य बन रहा है जिसमें व्यभिचार के लिए सफाई दी जाती है। यह साहित्य हमारी संस्कृति का आधार बनेगा? हमारा जीवन कितना छिछला और संकीर्ण होता जा रहा है। स्वार्थ के बावलेपन की छीना-झपटी और मारोमार हमें बदहवास किये दे रही है।

(द) चन्दा की नरम साँसों की हल्की सरसराहट कमरे में जान डालने लगी। जगपती अपनी पाटी का सहारा लेकर झुका, काँपते पैर उसने जमीन पर रखे और चन्दा की खाट के दायें से सिर टिकाकर बैठ गया। उसे लगा जैसे चन्दा की इन साँसों की आवाज में जीवन का संगीत गूँज रहा है। वह उठा और चन्दा के मुख पर झुक गया। उस अँधेरे में आँख गड़ाए-गड़ाए जैसे बहुत देर बाद स्वयं चन्दा के मुख पर आभा फूटकर अपने आप बिखरने लगी। उसके नक्श उज्जवल हो उठे और जगपती की आँखों को ज्योति मिल गयी। वह मुग्ध ताकता रहा।

इकाई - तीन

6. 'झाँसी की रानी' उपन्यास के किसी एक नारी-पात्र की चारित्रिक विशेषताओं का आकलन कीजिए। 7

7. ऐतिहासिक उपन्यास की दृष्टि से 'झाँसी की रानी' की सफलता पर विचार कीजिए। 7

इकाई - चार

8. प्रेमचन्द की कहानी-कला का वैशिष्ट्य निरूपित कीजिए। 7

9. शिल्प और संवेदना की दृष्टि से 'वापसी' कहानी का मूल्यांकन कीजिए। 7

A **(Printed Pages 4)**

Roll No. _____

A-196

बी. ए. (द्वितीय) परीक्षा, 2015

(रेगुलर)

हिन्दी

द्वितीय प्रश्न-पत्र

(हिन्दी कथा साहित्य)

समय : तीन घण्टे पूर्णांक : 50

निर्देश : कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **प्रथम प्रश्न अनिवार्य** है शेष चारों इकाइयों में से प्रत्येक से **एक-एक** प्रश्न करना आवश्यक है।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए : 2×10=20

(क) 'झाँसी की रानी' उपन्यास के चार स्त्रीपात्रों के नाम लिखिए।

(ख) वृंदावन लाल वर्मा के जिन दो उपन्यासों का फिल्मांकन हुआ है, उनके नाम लिखिए।

(ग) कहानी और उपन्यास में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

(घ) प्रेमचन्द के अंतिम दो उपन्यास कौन से हैं?

(ङ) प्रेमचन्द युगीन दो कहानीकारों का नामोल्लेख करते हुए उनकी एक-एक कहानी का नाम लिखिए।

(च) नयी कहानी के प्रमुख दो लेखकों के नाम लिखकर उनकी एक-एक कहानी के शीर्षक का उल्लेख कीजिए।

(छ) 'गुण्डा' कहानी के नायक का नाम लिखिए और उसकी चारित्रिक विशेषताओं का परिचय दीजिए।

(ज) 'राजा निरबंसिया' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए।

(झ) 'तीसरी कसम' कहानी की भाषागत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ञ) 'वापसी' कहानी के चार पात्रों के नाम लिखिए।

इकाई - एक

2. निम्नलिखित गद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए:4+4=8

(क) पुरूषों को पुरूषार्थ सिखाने के लिए स्त्रियों को मलखंब, कुश्ती इत्यादि सीखना ही चाहिए। खूब तेज दौड़ना भी। नाचने-गाने से भी स्त्रियों का स्वास्थ्य सुधरता है, परन्तु अपने को मोहक बना लेना ही स्त्री का समग्र कर्त्तव्य नहीं है।

(ख) उन्हें कुला लगाकर साफा बाँधने में एक असुविधा अवगत होती थी- लंबे केशों की। विधवा थीं, इसलिए महाराष्ट्र की प्रथा के अनुसार बाल मुड़वाने में कोई बाधा न थी। अपने केशों का कोई मोह था ही नहीं। सोचा, काशी जाकर मुंडन करा लें। पर्यटन हो जायेगा और काशी में बैठकर उस ओर की राजनीतिक परिस्थिति का आभास भी मिल जाएगा। एक भावना और थी-जिस घर में माता ने जन्म दिया था, उसके भी दर्शन मिल जाएँगे।

3. निम्नलिखित गद्यांशों की सन्दर्भसहित व्याख्या कीजिए :4+4=8

(ग) कमल फूलों का राजा है। सरस्वती की महानता, लक्ष्मी की विशालता उसके पराग और केसर में कहीं अदृष्ट रूप से निहित है। वह हिन्दुस्तान की प्रकृति का, संस्कृति का मृदुल, मंजुल, मांगलिक और पावन प्रतीक है। उसका रंग हलका लाल है। वह बिल्कुल रक्त नहीं है।हिन्दुस्तान में होने वाली क्रान्ति खूनी जरूर थी, परन्तु इस खूनी क्रान्ति के गर्भ में मंजुलता और पावनता गड़ी हुई थी।

(घ) उनकी दिनचर्या वैसे ही नियम-संयम के साथ चली जा रही थी। उनकी चर्या में केवल दो अन्तर आए। एक तो वह सुबह के नित्य कृत्यों और पूजा ध्यान के उपरान्त राज्य के कर्मचारियों को मिलने और उनकी समस्याओं को सुनने के लिए समय देने लगीं, दूसरे ठीक तीन बजे पश्चात् वह कचहरी करने लगीं। बड़े और महत्त्वपूर्ण मुकदमें वह स्वयं सुनती थीं और तुरन्त निर्णय कर देती थीं। कभी-कभी दंड भी स्वयं अपने हाथ से देती थीं, परन्तु केवल उन मामलों में, जिनमें किसी ने बालक या स्त्री को सताया हो।

इकाई - दो

4. निम्नलिखित गद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :4+4=8

(अ) बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था। दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक-दूसरे से मूक-भाषा में विचार-विनिमय करते थे। एक-दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाता था, हम नहीं कह सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है।

(ब) मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से आँसू छल-छल बहने लगे। दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछतीं पर वे बार-बार उमड़ आते; जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बन्द की, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।